

जल

17 जून 2017

जल का बहने का अधिकार है। हम लोगों के जल-अधिकार की बात करते हैं कति जल के अपने अधिकार की बात नहीं करते। एक नदी स्वतंत्र रूप से क्यों न बहे?

2010

जल-अधिकार केवल मनुष्य की संकल्पना नहीं है; स्वयं जल का भी अपना अधिकार है। स्वतंत्र रूप से बहना, अपना मार्ग ढूँढ़ना, भूमिगत भ्रमण करना, समुद्र तक पहुँचना। हम जतिना उसे पाइपो, बाँधों, बोटलों और नहरों में बंद करते हैं, उतना ही वस्तुतः अपनी रगों को अवरोध करते हैं। बोलीविया के संविधान में प्रकृति के अधिकारों का अंकन, इक्वाडोर की की संकल्पना — ये दूर के भूगोलों से आती हुई पुकारें हैं कति एक ही प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ती है: क्या जल का स्वामी कोई हो सकता है? इटली में जनमत-संग्रह से जल का नज्दीकरण रोका गया। यूनान में, आयरलैंड में, हर जगह लोग जल के माल बनने का वरीध करते हैं। कति तुर्की में यह चर्चा अभी पर्याप्त वसित्तु आधार पर नहीं टिकती। जल-अधिकार सक्रियता पर्यावरण आंदोलन के भीतर एक वशिष्ट कोना बनी रहती है; जबकि निल से बहती हर बूँद राजनीतिक है।

MNG

?

तुम्हें किसी एक वषिय का पीड़ित होने की आवश्यकता नहीं है — यदि वह पारस्थितिकीय वषिय हो। यहाँ महत्वपूर्ण यह है कि पीड़ित वैश्विक है। यह सत्य रेखांकित करना चाहिए कि प्रत्येक को प्रत्येक वषिय में बोलने का अधिकार है, और इसके विपरीत उपयोगों को अस्वीकार और नरिस्त करना चाहिए।

बीच में जो हम बचा सकते हैं, वह समाप्त हो रहा है। इसलिए शायद मुझे बहुत जल्दी है।

?

जल ही तो जीवन है। जल न हो तो कुछ नहीं।

« »

_____ , _____ ? - , _____ , _____ - _____ , _____

«_____ ? _____ : «_____ , _____ - _____ , _____ »

जल बहेगा, अपना मार्ग ढूँढ़ लेगा। मेरे विचार से हमें बहुत तेज़ चलने की आवश्यकता नहीं है।

«_____ , _____ - _____ - _____ ? _____ , _____ , _____ , _____ , _____ - _____ , _____ - _____ , _____

हमने जल कब से खरीदना आरंभ किया? 1980 के दशक में दुकानदार के पास जाकर बहुत प्यास लगी है कहने पर वह एक गलास जल दे देता था। नःशुल्क। वही जल आज एक व्यापारिक माल है, एक की बोतल में, एक ब्रांड के पीछे। यह परिवर्तन इतना धीमा हुआ कि हमने ध्यान भी न दिया। ठीक वैसे ही जैसे ताम्र-कड़ाही की जगह टैफ्लॉन के तवे ने ले ली; जैसे सामूहिक शर्म () की जगह व्यक्तिगत उपभोग ने ले ली। सुविधा प्रस्तुत की गई, उसका मूल्य नहीं पूछा गया।

_____ , _____ , _____ , _____ , _____ - _____ ; _____ - _____ ?

वहाँ से बहती हुई पाइप, सेप्टिक नालियाँ — उनकी जगह जीवन बह सकता था। हमने अपने चुनाव से, इस कचरे की सभ्यता के भीतर, उन्हें कचरे के मार्ग में बदल दिया।

एक दूसरी कलाकार कुरबागलीदेरे के तट पर (संसर्ग) नामक एक प्रतिष्ठापन रचती है। नदी अब बहती नहीं, दुरगंध करती है। वह चाहती है कि लोग उस गंध, उस दृश्य के संसर्ग में आएँ। जल हमारे सामने दर्पण थामे है; जब देखते हैं, स्वयं को देखते हैं, कति देखना नहीं चाहते। और तीसरी कलाकार कहती है कि सिनिमा की प्रकृति में जल है। प्रथम सिनिमाकारों ने जो दर्ज करना चाहा वह सदा जल था — प्रवाह, कालातीतता, गति। जल की कालातीतता और तरल अवस्था, सिनिमा भी कुछ-कुछ वैसा — ये परस्पर जुड़ी वस्तुएँ हैं। दर्शक उस प्रवाह के भीतर अपना समय पा लेता है। और संभवतः सिनिमा भी जल के समान है: बहता है, रूपांतरित होता है, खो जाता है, कति चहिन छोड़ जाता है।

_____ , «_____ , _____ » - _____ , _____ ? _____ ; _____ : _____ , _____

_____ - _____ : «_____ - _____ » : _____ , _____ , _____ , _____ , _____ - _____ , _____ ; «_____ , _____ »

तो यह ज्ञान हम कैसे ले जाएँगे? एक ओर ले जाने का विचार है — कलाकारों, संगीतकारों, रंगकर्मियों को गाँवों में ले जाना, पारस्थितिकी-उत्सव आयोजित करना। कति दूसरी ओर, ले जाने के बजाय साथ-साथ उत्पादन करना अधिक उचित है। आने वाला कलाकार वहाँ कुछ देने नहीं, वहाँ के अनुभव को जानने, उसके साथ काम करने जाता है। गाँव की चक्की देखना, हेजलनट संग्रह के सामूहिक शर्म () में भाग लेना, संध्या में लोकगीत सुनना — ये पर्यटक-अनुभव नहीं, साझा उत्पादन की भूमि हैं। पगडंडी की रक्षा करना, चक्की की मरम्मत करना। उस भूगोल से संबंध बनाने वाले लोगों में पहले से ही प्रबल प्रेरणाएँ हैं। प्रश्न यह है कि इस संबंध को एकतरफा होने से कैसे बाहर निकाला जाए। वहाँ पहले से ही ऐसे लोग हैं जिन्होंने ग्राम-गृह बनाया है, सब-कुछ स्वयं उगाते हैं, बना कोई खरीद के जीते हैं। उनसे सीखने के लिए बहुत कुछ है। हम वहाँ जाएँगे, जो मैं कह रहा हूँ वह जरिँगे। अल्पकाल में किसी अपेक्षा से नहीं।

_____ , _____ , _____ - _____ «_____ » _____ :

_____ , _____ , _____ ; _____ «_____ » _____ , _____

_____ - _____ , _____ , _____ , _____ , _____ ; _____ , _____ , _____ , _____

वहाँ के लोग प्रकृति के विकास को पहले ही देख चुके थे और उनसे नषिकर्ष निकाल चुके थे। उनसे एक कहावत निकली। आप कल्पना कर सकते हैं? ऐसी इतनी वस्तुएँ हैं जो मैंने नोट की हैं, मैं उन्हें संचित कर रहा हूँ।

„ - - , , : « - , , , ; »

, , ; , - ; - « , » , - ; - , , ,

, , , - , - « » - , , - ;

ये मेटास्टेसिस है। मुख्य रोग जहाँ है, वहीं हमें ध्यान केंद्रित करना चाहिए। हम कहाँ हैं, यह महत्वपूर्ण नहीं।

और संभवतः का मूल रूपक — अदरक — यहाँ अर्थ ग्रहण करता है। साथ रहने की बाधयता न रखने वाले, परिवर्तनशील, एक-दूसरे पर बोझ न डालने वाले कति एक ही जड़ से निकलते मलिन। मूल जड़ के रूप में ये बातचीतें; उनसे फूटने वाली परियोजनाएँ, विचार-मंच, प्रकाशन, मुलाकातें — अदरक की छोटी जड़ों की तरह, अपने मार्ग ढूँढ़ लेगी। ठीक वैसे ही जैसे जल अपना मार्ग ढूँढ़ लेता है। महत्वपूर्ण है मलिना, परिचित होना, साथ-साथ साँस लेना। तुरंत परिणाम की प्रतीक्षा करने के बजाय, प्रक्रिया पर विश्वास करना। अल्पकालिक न सोचना। हमने एक मार्ग आरंभ किया — संभवतः साथ भोजन करते हुए, संभवतः पत्र-व्यवहार से, संभवतः पुनः बात करते हुए, संभवतः इस्तांबुल में, संभवतः काला सागर में, संभवतः मार्दानि में मलिते हुए। पारस्परिकि ज्ञान और अनुभव का आदान-प्रदान; कला में विशेष रूप से, और समग्र रूप में भी। संभवतः हम वहाँ जाते समय हानि भी करते हैं; उस ओर से थोड़ा देखना आवश्यक है। कति वहाँ गए बनि भी, वहाँ के लोग कहे देखो, लोग आ रहे हैं, देखो ये कतिने जिज्ञासु हैं, यह कतिनी मूल्यवान वस्तु निकली — यह भी एक कदम है।